AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

जनजातीय विद्यार्थियों में सामाजिक संबंधः एक अध्ययन

प्रियंका तोपनो

एम.एड.अध्येता

ंऔर

डॉ.दीपशिखा बाखला

विभागाध्यक्ष (एम.एड.)

बेथेसदा महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय,

राँची, झारखण्ड

शोध सारः मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, परन्तु आज के इस युग में सामाजिक संबंध बहुत कम या न के बराबर देखने को मिलते हैं। बच्चे हो या बड़े सोशल मीडिया में ही सामाजिक संबंधों को निभाते हुए नजर आते हैं। सामाजिक संबंधों से तात्पर्य व्यक्तियों या लोगों की उन पारस्परिक क्रियाओं से होता है जो अर्थपूर्ण रूप से या किसी विशेष उद्देश्य को पूरा करने के लिए स्थापित किया जाता है। सामाजिक संबंध का निर्माण सामाजिक अंतर्क्रिया के परिणामस्वरूप होता है। विद्यालय समाज का एक लघु रूप है। विद्यालय एक सामाजिक संस्था है, जहाँ बच्चों में सामाजिक गुणों का विकास किया जाता है ताकि वे समाज में, परिवार में सामंजस्य करने योग्य बन सकें। इस शोध अध्ययन में कक्षा 8 के जनजातीय बच्चों के मध्य में सामाजिक संबंधों के स्तर को ज्ञात करने की कोशिश की गई है। न्यादर्श के रूप में गुमला जिला के बसिया प्रखंड के कक्षा 8 के 200 बच्चों पर शोध किया गया है। निष्कर्ष के रूप में उनमें औसत या मध्यम स्तर के सामाजिक संबंध देखने को मिले। बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक संबंध के स्तर में सार्थक अंतर नहीं देखने को मिला। अंग्रेजी तथा हिंदी माध्यम के जनजातीय बच्चों में सामाजिक संबंधों की स्थिति में सार्थक अंतर प्राप्त हुआ।

कीवर्ड – सामाजिक संबंध,जनजातीय विद्यार्थी

प्रस्तावना

मनुष्य किसी भी राष्ट्र एवं समाज की प्रगति का महत्वपूर्ण साधन है। जिस प्रकार शिक्षा एवं समाज का अटूट संबंध है, उसी प्रकार मानव का शिक्षा से गहरा संबंध है। शिक्षा द्वारा ही मानव समाज का विकास

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

संभव है। शिक्षा विकास की प्रक्रिया है। यह जीवन पर्यन्त चलती रहती है। यह मानव को समाज और संसार से बेहतर संबंध स्थापित करने हेतु ज्ञान अनुभव नैतिक मूल्यों को सीखने की अनुमति देती है। मानव जीवन के विकास में शिक्षा का स्थान सर्वोपरि होता है। यह व्यक्ति को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में योग्यता एवं कौशल प्रदान करती है। शिक्षा मानव के विकास का मूल आधार है। मानव के विकास पर ही किसी राष्ट्र एवं समाज का विकास निर्भर करता है।

समाज, व्यक्तियों का समूह मात्र नहीं है, अपितु यह सामाजिक संबंधों का जाल है। जब दो या दो से अधिक व्यक्ति परस्पर प्रेम, सहयोग, सद्भावना, मित्रता या इसके विपरीत भावों का अनुभव करते हैं जिसके परिणामस्वरूप जो सामाजिक वातावरण उत्पन्न होता है, वह समाज कहलाता है। और इसी समाज में मनुष्य की पारस्परिक संबंधों की व्यवस्था पाई जाती है। सामाजिक संबंधों का निर्माण सामाजिक अंतःक्रिया के परिणामस्वरूप होता है।

सामाजिक संबंधों दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच का संबंध है। इसके अंतर्गत परिवार के सदस्यों, पड़ोसियों, मित्रों, सहकर्मियों, सहपाठियों एवं अन्य सहयोगियों के बीच के संबंध को भी शामिल किया जाता है। मानव के जीवन में इन संबंधों का विशेष स्थान होता है। इनके बिना हम सामाजिक जीवन की कल्पना नहीं कर सकते हैं। इन्हें सामाजिक संबंधों से व्यक्ति एक दूसरे से जुड़े होते हैं और इन्हीं संबंधों द्वारा व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है।

समस्या का औचित्य

मनुष्य का समाज के साथ अटूट संबंध है। मनुष्य का चहुंमुखी विकास समाज में ही होता है। अतः उनके लिए शिक्षा की व्यवस्था समाज में ही की जाती है। मनुष्य जन्म से ही सामाजिक प्राणी नहीं होता है, अपितु उसमें धीरे धीरे शिक्षा के माध्यम से सामाजिक गुणों का विकास किया जाता है। विद्यालय समाज का लघु रूप है। जहाँ विद्यार्थियों का सामाजीकरण किया जाता है। विद्यालय में ही विद्यार्थियों को समाज के लिए उत्कृष्ट नागरिक बनाया जाता है। विद्यार्थियों को उत्तम सामाजिक संबंध बनाने हेतु उचित वातावरण विद्यालय में ही प्रदान किया जाता है। सामाजिक प्राणी होने के कारण समाज में एक व्यक्ति के कई प्रकार के सामाजिक संबंध होते है। ये सारे सामाजिक संबंध उनके जीवन को प्रभावित करते है। अतः विद्यार्थियों की सामाजिक संबंधों का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक होता है।

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

यदि वर्तमान समय की बात की जाए तो आज विद्यार्थियों के सामाजिक संबंध में उदासीनता आ रही है। जिसके कारण विद्यार्थी स्वयं तक सीमित होता जा रहा है। वह स्वयं को वातावरण या परिवेश से कटा हुआ महसूस करता है। कभी–कभी अकेलेपन से निपटने के लिए विद्यार्थी नशीले पदार्थों का सेवन करना शुरू कर देते हैं। जिससे उनके शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर गहरा प्रभाव पड़ता है। साथ ही साथ उसके शैक्षणिक प्रदर्शन पर भी कुप्रभाव पड़ता है। अतः शिक्षकों का परम कर्तव्य है कि वे विद्यार्थियों के सामाजिक संबंधों का उचित मार्गदर्शन करें, विद्यार्थी–विद्यार्थी के बीच सकारात्मक संबंध को विकसित करें, उनके सामाजिक संबंधों को मजबूत बनाएं। जिससे कि वे अपनी समस्याओं को अपने शिक्षकों, अपने माता पिता, अपने अभिभावकों से साझा कर सकें।

समस्या कथन

''कक्षा 8 के जनजातीय विद्यार्थियों में सामाजिक संबंध का अध्ययन।''

शोध अध्ययन के उद्देश्य

1. कक्षा 8 के जनजातीय विद्यार्थियों में सामाजिक संबंधों के स्तर का अध्ययन करना।
2. कक्षा 8 के जनजातीय बालक एवं बालिकाओं में सामाजिक संबंधों का अध्ययन करना।
3. कक्षा 8 के हिंदी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के जनजातीय विद्यार्थियों में सामाजिक संबंध का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

1. कक्षा 8 के जनजातीय विद्यार्थियों के सामाजिक संबंध में कोई सार्थक स्तर नहीं होगा।
2. कक्षा 8 के जनजातीय बालक एवं बालिकाओं में सामाजिक संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. कक्षा 8 के हिंदी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के जनजातीय विद्यार्थियों के सामाजिक संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में शोध के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए वर्णनात्मक शोध के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। यह एक मात्रात्मक शोध है। सर्वेक्षण के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। प्रश्नावली की वैधता ज्ञात करने के लिए विशेषज्ञों के समक्ष प्रश्नावली प्रस्तुत की गई एवं

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए split half method का उपयोग किया गया। इसमें सहसंबंध की गणना करने के लिए पियर्सन सहसंबंध विधि का प्रयोग किया गया एवं संपूर्ण परीक्षण की विश्वसनीयता ज्ञात करने के लिए पियर्सन मैन ब्राउन प्रोफेसी सूत्र का प्रयोग किया गया, जिसमें विश्वसनीयता 0.53 प्राप्त हुए। आरंभ में प्रश्नों की संख्या 40 एवं अंतिम प्रश्नों की संख्या 20 थे आंकड़ों के संकलन के लिए यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि का प्रयोग किया गया। अध्ययन के नमूने के रूप में बसिया प्रखंड के कक्षा 8 के जनजातीय विद्यार्थियों का उपयोग किया गया है। नमूने से जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। इसमें शोधकर्ता ने अध्ययन हेतु प्राथमिक डेटा का प्रयोग किया है। डेटा के विश्लेषण के लिए spss का उपयोग किया गया है।

शोध उपकरण

इस शोध में कक्षा 8 के जनजातीय विद्यार्थियों में सामाजिक संबंध का अध्ययन करने हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली उपकरण का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

इस शोध अध्ययन में गुमला जिला के बसिया प्रखंड के कक्षा 8 के जनजातीय विद्यार्थियों को लिया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में कक्षा 8 के 200 जनजातीय विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का उपयोग किया गया है– मध्यमान, मानक विचलन, जेड स्कोर, टी.परीक्षण।

आंकड़ों का विश्लेषण

परिकल्पना 1

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

कक्षा आठ के जनजातीय विद्यार्थियों में सामाजिक संबंध में कोई सार्थक स्तर नहीं होगा।

उपर्युक्त परिकल्पना को सिद्ध करने के लिए एकत्रित डेटा का विश्लेषण किया गया, जिसमें मध्यमान, मानक विचलन तथा जेड स्कोर के माध्यम से तालिका संख्या एक में दर्शाने का प्रयास किया गया है।

तालिका संख्या 4.2

क्रम संख्या	श्रेणी	सामाजिक संबंध का स्तर	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1	+2.01 and above	अत्यंत उच्च सामाजिक संबंध	06	3
2	+1.26 to +2.00	अत्यधिक सामाजिक संबंध	17	8.5
3	+ 0.51 to +1.25	औसत से अधिक सामाजिक संबंध	27	13.5
4	-0.50 to +0.50	औसत या मध्यम सामाजिक संबंध	80	40
5	-0.51 to -1.25	औसत से कम सामाजिक संबंध	54	27
6	-1.26 to -2.00	अत्यधिक कम सामाजिक संबंध	13	6.5
7	-2.01 and below	अत्यंत कम सामाजिक संबंध	03	1.5

पाई चार्ट संख्या 4.1 कक्षा 8 के जनजातीय विद्यार्थियों में सामाजिक संबंध का स्तर

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

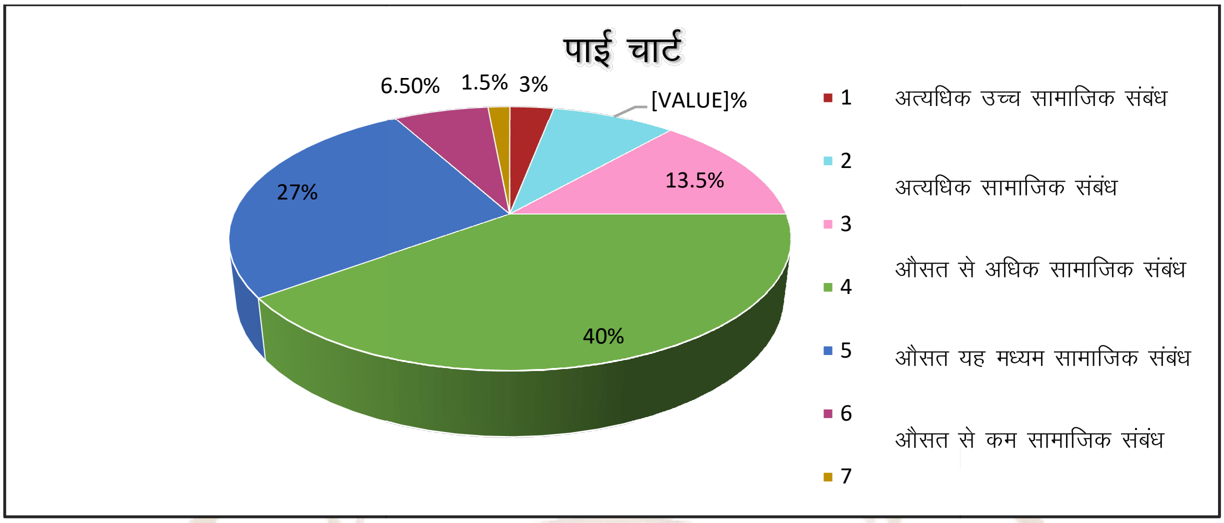

उपरोक्त सारणी संख्या 4.2 में कक्षा आठ के जनजातीय विद्यार्थियों के सामाजिक संबंध के स्तर को दर्शाया गया है।

1. +2.01 और उससे अधिक श्रेणी में 6 ऐसे विद्यार्थी हैं जिनका सामाजिक संबंध अत्यंत उच्च स्तर का है।
2. +1.26 से। +2.00 श्रेणी में 17 विद्यार्थी ऐसे हैं जो अत्यधिक सामाजिक संबंध वाले हैं।
3. +0.51 से +1.25 श्रेणी में 27 विद्यार्थी ऐसे है जिनका सामाजिक संबंध औसत से अधिक है।
4. −0.50 से +0.50 श्रेणी में ऐसे 80 विद्यार्थी हैं जिनका सामाजिक संबंध औसत या मध्यम है।
5. −0.51 से −1.25 श्रेणी में 54 विद्यार्थी हैं, जिनका सामाजिक संबंध औसत से कम है।
6. −1.26 से −2.00 श्रेणी में 13 विद्यार्थी हैं, जिनका सामाजिक संबंध अत्यधिक कम है।
7. −2.01 से कम श्रेणी में 3 विद्यार्थी हैं, जिनका सामाजिक संबंध अत्यंत कम है।

परिकल्पना 2

कक्षा आठ के जनजातीय बालक एवं बालिकाओं में सामाजिक संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा। उपर्युक्त परिकल्पना को सिद्ध करने के लिए एकत्रित डेटा का विश्लेषण किया गया है, जिसमें मध्यमान मानक विचलन एवं टीम परीक्षण के माध्यम से तालिका संख्या 4.3 में दर्शाने का प्रयास किया गया है।

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

तालिका संख्या 4.3

कक्षा आठ के जनजातीय बालक एवं बालिकाओं के प्राप्तांकों का विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	टी. मान	सार्थकता का स्तर (0.05)
बालक	101	76.32	6.77	198	0.92	1.96
बालिका	99	77.17	7.03			Not Significant

ग्राफ संख्या 4.3 कक्षा 8 के जनजातीय बालक एवं बालिकाओं में सामाजिक संबंध के सार्थक अंतर को दर्शाता हुआ।

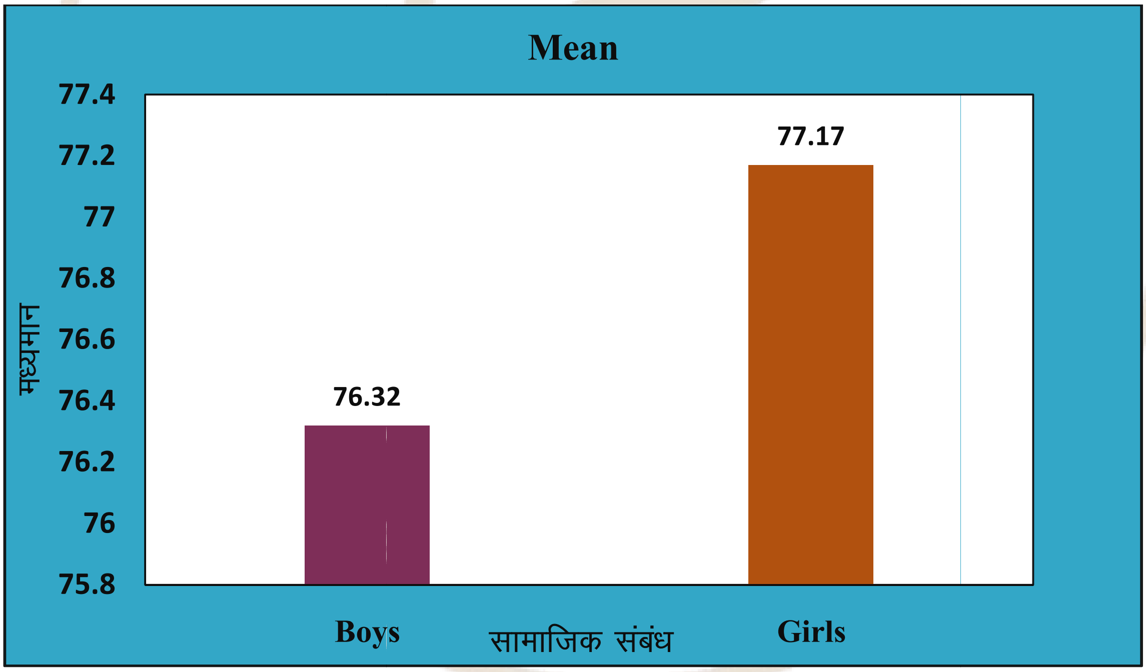

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

उपरोक्त सारिणी संख्या 4.3 में दोनों समूह के जनजातीय विद्यार्थियों के सामाजिक संबंध की तुलना करने के लिए एक स्वतंत्र नमूना टी. परीक्षण आयोजित किया गया था। जिसमें बालक एवं बालिका का मध्यमान क्रमशः 76.32 एवं 77.17 अथवा मानक विचलन क्रमशः 6.77 एवं 7.03 प्राप्त हुआ।

गणना द्वारा टी. परीक्षण का मान 0.92 पाया गया, जो df 198 में 0.05 स्तर के टी. मान 1.96 से कम है। अतः इस शून्य परिकल्पना को स्वीकार किया जाता है। कक्षा 8 के जनजातीय बालक एवं बालिकाओं के बीच सामाजिक संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। अर्थात् दोनों के सामाजिक संबंध समान है।

परिकल्पना 3

कक्षा 8 के हिंदी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के जनजातीय विद्यार्थियों में सामाजिक संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

उपर्युक्त परिकल्पना को सिद्ध करने के लिए एकत्रित डेटा का विश्लेषण किया गया है, जिसमें मध्यमान, मानक विचलन एवं टी. परीक्षण के माध्यम से तालिका संख्या 4.4 में दर्शाने का प्रयास किया गया है।

तालिका संख्या 4.4

कक्षा 8 के हिंदी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के जनजातीय विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का विश्लेषण

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	df	टी. मान	सार्थकता का स्तर (0.05)
अंग्रेजी माध्यम	84	79.48	7.51	198	5.46	1.96
हिंदी माध्यम	116	74.46	5.48			Significant

ग्राफ संख्या 4.4 कक्षा 8 के हिंदी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के जनजातीय विद्यार्थियों में सामाजिक संबंध के अंतर को दर्शाता हुआ

AD EDUXIAN JOURNAL
(A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed International Journal)
www.educarepublication.com
E-ISSN: 3048-9751
Volume-1, Issue-2, October 2024

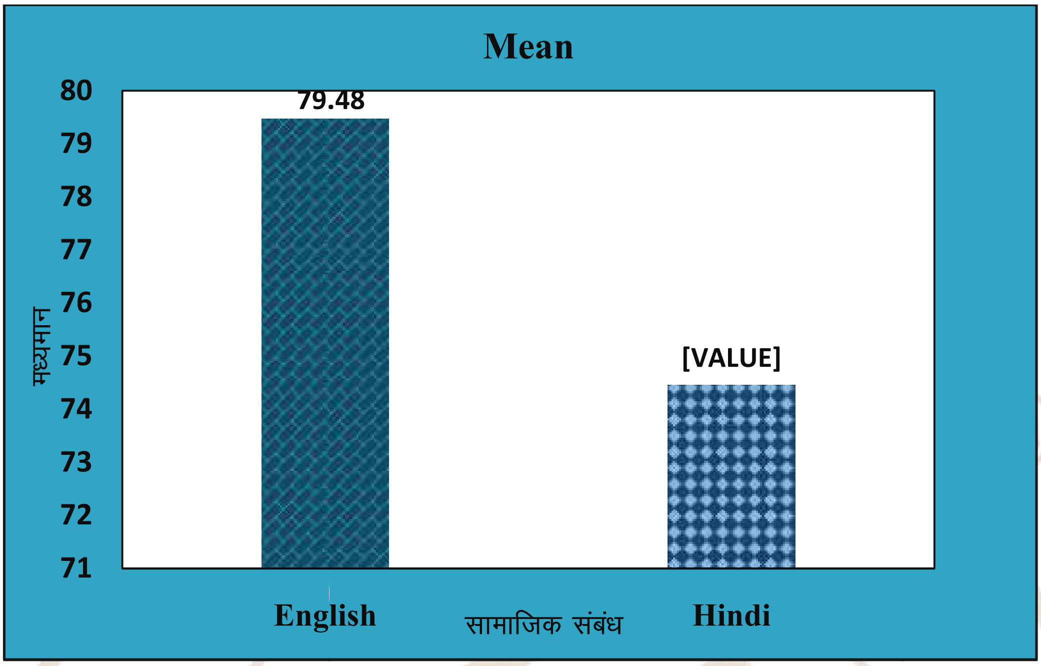

उपरोक्त सारणी संख्या 4.4 में दोनों समूहों के जनजातीय विद्यार्थियों के सामाजिक संबंध की तुलना करने के लिए एक स्वतंत्र नमूना टी. परीक्षण आयोजित किया गया था। जिसमे अंग्रेजी माध्यम एवं हिंदी माध्यम के जनजातीय विद्यार्थियों का मध्यमान क्रमशः 79.48 एवं 74.46 अथवा मानक विचलन क्रमशः 7. 51 एवं 5.48 प्राप्त हुआ। गणना द्वारा प्राप्त टी मान 5.46 है। जो df 198 में 0.05 स्तर के टी मान 1. 96 से अधिक है। अतः इस शून्य परिकल्पना को अस्वीकार किया जाता है। कक्षा 8 के हिंदी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के जनजातीय विद्यार्थियों में सामाजिक संबंध में सार्थक अंतर पाया गया। हिंदी माध्यम के जनजातीय विद्यार्थियों की अपेक्षा अंग्रेजी माध्यम के जनजातीय विद्यार्थियों का सामाजिक संबंध ज्यादा अच्छा है।

शोध से प्राप्त निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में संकलित आंकड़ों की सांख्यिकी विश्लेषण एवं व्याख्या से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं–

1. आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या से ज्ञात होता है कि कक्षा 8 के जनजातीय विद्यार्थियों में सामाजिक संबंध में कोई सार्थक स्तर नहीं है।

2. आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या के आधार पर ज्ञात होता है कि कक्षा 8 के जनजातीय बालक एवं बालिकाओं के सामाजिक संबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात् बालक एवं बालिकाओं का सामाजिक संबंध समान है।
3. आंकड़ों के विश्लेषण एवं व्याख्या से ज्ञात होता है कि कक्षा 8 के हिंदी माध्यम एवं अंग्रेजी माध्यम के जनजातीय विद्यार्थियों के सामाजिक संबंध में सार्थक अंतर है। हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों की अपेक्षा अंग्रेजी माध्यम के विद्यार्थियों का सामाजिक संबंध ज्यादा अच्छा पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

विद्यार्थी जीवन हर किसी के जीवन का अहम पड़ाव होता है। क्योंकि इसी विद्यार्थी जीवन में एक विद्यार्थी उचित एवं अनुचित में फर्क करना सीखता है। विद्यार्थी जीवन किसी भी व्यक्ति के भावी जीवन की नींव होती है। शैक्षिक संदर्भ में देखा जाए तो एक विद्यार्थी के जीवन में सामाजिक संबंधों का विशेष महत्त्व होता है। विद्यालय जाने से पूर्व एक बालक का संबंध अपने परिवार तक सीमित होता है, किंतु विद्यालय में प्रवेश के पश्चात् एक विद्यार्थी का संबंध विस्तृत हो जाता है। उनका संबंध शिक्षकों, विद्यालय कर्मचारियों, मित्रों, सहपाठियों आदि से होता है।

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध अध्ययन में कक्षा आठ के जनजातीय विद्यार्थियों में सामाजिक संबंध का अध्ययन करना विषय का चयन किया है। इस शोध के निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ हैं –

1. यह शोध अध्ययन विद्यालय के विद्यार्थियों लिए लाभकर सिद्ध होगा।
2. यह शोध कार्य स्वास्थ सामाजिक संबंध के निर्माण में सहायक सिद्ध होगा।
3. इस शोध कार्य द्वारा विद्यार्थियों के सामाजिक संबंधों को सही दिशा प्रदान की जा सकेगी।
4. इस शोध कार्य द्वारा शिक्षक एवं अभिभावकों को विद्यार्थियों के सामाजिक संबंध को समझने में सहायता मिलेगी।
5. इस शोध अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों में सकारात्मक सामाजिक संबंध द्वारा सहयोग की भावना उत्पन्न की जा सकेगी।
6. शोध कार्य द्वारा शिक्षक एवं विद्यार्थियों के सामाजिक संबंध में सकारात्मक परिवर्तन किया जा सकता है।
7. इस शोध द्वारा विद्यार्थी विद्यालय, परिवार एवं समाज में बेहतर सामाजिक संबंध स्थापित कर सकेंगे।

सुझाव

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन को विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर किया जा सकता है।
2. प्रस्तुत शोध अध्ययन को अन्य भौगोलिक क्षेत्र में विद्यार्थियों पर विस्तृत रूप से किया जा सकता है।
3. प्रस्तुत शोध को भविष्य में विस्तृत न्यायदर्श पर किया जा सकता है और अधिक प्रमाणिक निष्कर्ष प्राप्त कर सकता है।
4. प्रस्तुत शोध को शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

- अस्थाना बिपिन, 2008, अधिगम के लिए आकलन, अग्रवाल पब्लिकेशन, पृष्ठ सं. 196
- अमाती विवियाना, मेगियोलारो सिल्विया, रिवेलिनी गिउलिया और जकारिन सुजाना, 2018, सामाजिक संबंध और जीवन संतुष्टि मित्रों की भूमिका, जर्नल ऑफ पापुलेशन साइंस, आर्टिकल 74, पृष्ठ सं. 1,11
- ओल्डिंग आरोन ली., 2013, ऑस्ट्रेलिया में पढ़ने वाले अंतरराष्ट्रीय छात्रों के बीच सामाजिक संबंधों और सामाजिक संबंधों में फेसबुक की भूमिका यू.टी.ए.एस., पृष्ठ सं.,4,5
- किम जिन्हो, 2020, विद्यालय में सामाजिक संबंधों की गुणवत्ता और छात्र–छात्र बनाम छात्र–शिक्षक संबंध के स्वास्थ्य संबंधी अंतर, अमेरिकन साइकोलॉजी एसोसिएशन,पृष्ठ सं.1,4
- कितीशात डॉ. अमल रियाद और फ्रेटहैट डॉ. हाना महमूद, 2015, सफल सामाजिक संपर्क और भाषा अधिग्रहण में सामाजिक संबंध की भूमिका, रिसर्च ऑन ह्यूमानिटीज एंड सोशल साइंस, वॉल्यूम 5, पृष्ठ सं. 194
- गुप्ता डॉ अल्का, 2015, य.जी.सी. राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा शिक्षाशास्त्र, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद पृष्ठ सं. 459,462,474
- गोस्वामी हरिधन, 2011, सामाजिक संबंध और बच्चों की व्यक्तिपरक भलाई, सोशल इंडिकेटर रिसर्च, पृष्ठ सं. 575
- दुबे डॉ. मनीष, 2016, शिक्षा के सामाजिक आधार, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय चित्रकूट मध्य प्रदेश, पृष्ठ सं. 18,19,

- भटनागर डॉ. आर. पी., भटनागर डॉ. ए. बी., भटनागर डॉ. अनुराग, 2008 शिक्षा अनुसंधान, आर लाल पब्लिकेशन, पृष्ठ सं. 93,94,362
- गैरिडो लौरा कैमास और मोया ऐडा वेलोरो और मोरानचो मिरिया वेंड्रेल, 2021, शैक्षिक उद्देश्यों के लिए सोशल नेटवर्क साइटों के उपयोग में शिक्षक–विद्यार्थी संबंधः एक व्यवस्थित समीक्षा, जर्नल ऑफ न्यू अप्रोचेस इन एजुकेशनल रिसर्च, वॉल्यूम 10, पृष्ठ सं. 137,145,146
- गोस्वामी हरिधन, 2011, सामाजिक संबंध और बच्चों की व्यक्तिपरक भलाई, सोशल इंडियन रिसर्च, पृष्ठ सं. 107
- जायौसी डॉ. मजीदी, 2016, सैलफिट गवर्नमेंट स्कूलों में शिक्षकों के परिपेक्ष्य से छात्रों के सामाजिक संबंधों पर इंटरनेट का प्रभाव, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, वॉल्यूम 14, पृष्ठ सं. 99,103
- थर्स्टन एलेन, रोसेथ कैरी, जियांग किम हुई, बनर्स विक्टोरिया और टापिंग कीथ जे., 2020, प्राथमिक विद्यालय में सहकर्मी ट्यूशन का उपयोग करते समय गणित के परिणामों पर सामाजिक संबंध का प्रभाव, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च ओपन , पृष्ठ सं. 1,37
- दास पंकज,भारती और बनर्जी राहुल, 2022, डेटा विश्लेषण में अंतर्दृष्टि, भारतीय कृषि सांख्यिकी अनुसंधान संस्थान नई दिल्ली, अंक 5, पृष्ठ सं. 62,64
- दास राजू जे., 2001, सामाजिक संबंधों की स्थानीयताः एक भारतीय केस स्टडी, जर्नल ऑफ रूलर स्टडीज़, वॉल्यूम 17, पृष्ठ सं.347
- पलहान सिरिंडा, 2022, सामाजिक नेटवर्क विश्लेषण पर आधारित छात्रों की सामाजिक भूमिकाओं और शैक्षणिक प्रदर्शन के बीच संबंध, रंगसिट जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज, वॉल्यूम 9, पृष्ठ सं. 62
- प्रकाश ओम, 2016, सामाजिक संबंधों और सामाजिक समर्थन में लिंग अंतरः स्कूली बच्चे, द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी, वॉल्यूम 4, पृष्ठ सं. 128,129
- मरे क्रिस्टोफर और ग्रीनबर्ग मार्क टी., 2006, उच्च घटना विकलांगता वाले बच्चों के जीवन में सामाजिक संबंधों और सामाजिक संदर्भ के महत्त्व की जांच, द जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन, वॉल्यूम 39,

- मोआवाद गेहान ई.एल. नवाबी और इब्राहिम गौहरा गाद् सोलिमन, 2016, प्रौद्योगिकी के उपयोग में माता पिता किशोर सामाजिक संबंधों के बीच संबंध, जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड प्रैक्टिस, वॉल्यूम 7, पृष्ठ सं. 168,170
- लोपेज पाउलो एन., सलोवी पीटर और स्ट्रॉस रेबेका, 2003, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, व्यक्तित्व और सामाजिक संबंधों की कथित गुणवत्ता, पर्सनालिटी एंड इंडिविजुअल्स डिफरेंस, पृष्ठ सं. 3
- लुआंग ग्लोरीया, चार्ल्स सुसान टी. और फिंगरमैन करेन एल., 2011, उम्र के साथ बेहतर वयस्कता के दौरान सामाजिक संबंध, इंटरनेशनल असोसिएशन फॉर रिलेशनशिप रिसर्च, वॉल्यूम 28, पृष्ठ सं. 9,10,28
- वेंटजेल कैथरीन आर., 1998, मिडिल स्कूल में सामाजिक संबंध और प्रेरणा माता–पिता, शिक्षकों और साथियों की भूमिका, जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलोजी, वॉल्यूम 90, पृष्ठ सं. 202
- सुमैया मोमिन और महमूद सिद्दीकी मो., 2022, सामाजिक संबंधों और शैक्षणिक उपलब्धियों पर सोशल मीडिया का प्रभाव, द ऑनलाइन जर्नल ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन एंड लर्निंग, वॉल्यूम 10, पृष्ठ सं. 376,377
- सेंटर मैरी शेउर, 2023, महामारी के दौरान कॉलेज के छात्रों के सीखने पर सामाजिक संबंधों का प्रभाव समाजशास्त्रियों के लिए निहितार्थ, नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन पृष्ठ सं. 1
- सक्सेना एन. आर. स्वरूप और कुमार संजय, 2008, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्रीय सिद्धांत, आर. लाल पब्लिकेशन, पृष्ठ सं. 345,
- सिंह डॉ. जे. पी, 2003, प्रारंभिक समाजशास्त्र, बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, पृष्ठ सं. 35
- सिंह परिहार डॉ. अमर जीत, 2008, शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, आर लाल पब्लिकेशन, पृष्ठ सं. 145,159,567,603, पृष्ठ सं.
- होल्डर मार्क डी. और कोलमैन बेन 2009, बच्चों की खुशी में सामाजिक संबंधों का योगदान, जे. हेपीनेस स्टूड, पृष्ठ सं. 329
- हैलर मैक्स और हैंडलर मार्कस, 2006, कैसे सामाजिक संबंध और संरचनाएँ खुशी और नाखुशी पैदा कर सकती हैः एक अंतरराष्ट्रीय तुलनात्मक विश्लेषण, सोशल इंडक्टर्स रिसर्च, पृष्ठ सं. 169

- हुसैन डॉ. इमरान, कुमार डॉ. प्रदीप और जॉन एन्जेल अनु, 2017, सामाजिक संबंध, शैक्षणिक प्रदर्शन, आहार संबंधी आदतें, स्कूली बच्चों में बॉडी मांस इंडक्शनः एक तुलनात्मक अध्ययन, इंटरनेशनल जनरल फॉर इनोवेटिव रिसर्च इन मल्टी डिसिप्लिनरी फील्ड, वॉल्यूम 3, पृष्ठ सं. 193,192
- http://DX.dol.orgl10/037/spq00373
- https://digitalcommons.UNL.edu/cehsedaddiss
- https://shode.inflibnet.ac.in
- www.iiste.org
- https://shodhgangotri.inflibnet.ac.in